Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 6, JUNE - 2022 Publication Date: 30/06/2022

DOIs:10.2018/SS/202206007 --:-- Research Article

मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के समायोजन एवं आक्रामकता का अध्ययन

[1]शाफ़िया अंजुम, [2]मोहम्मद कमाल अली

[1]मनोवैज्ञानिक, निर्वाण हॉस्पिटल एवं नशा मुक्ति केंद्र, बरेली, उत्तर प्रदेश
[2]स्नातकोत्तर, मनोविज्ञान, एम.जे.पी. रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश
Email – [1]syedashafiya79420@gmail.com, [2] kamaalalizaidi@gmail.com

सार: *मद्यपान के सेवन का चलन वर्तमान में सार्थक रूप से वृद्धि पर है, शराब का सेवन आर्थिक-सामाजिक स्थिति के घोतक के रूप में सामने आ रहा है। जिसके चलते इसकी अतिशय भी बढ़ रही है जो हिंसा, अपराध, दुर्घटना एवं अन्य शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं को जन्म देती है। मद्यपान से व्यक्ति के समायोजन एवं आक्रामकता पर पड़ने वाले प्रभावों को जानने के उद्देश्य से अध्ययन किया गया। अध्ययन में मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के समायोजन एवं आक्रामकता की तुलना के लिए सर्वेक्षण अनुसंधान विधि को उपयोग मे लाया गया। अध्ययन में बरेली जिले के 50 मद्यपान करने वाले एवं 50 सामान्य व्यक्तियों (जिनमे 50 पुरुषों एवं 50 महिलाओं) को यादच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चुना गया। दोनों समूहों पर कुमार की संशोधित समायोजन मापनी एवं माथुर और भटनागर की आक्रामकता मापनी का प्रशासन किया। दोनों समूहों से प्राप्त आंकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। जिसके लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान की गणना की गयी। गणना मे प्राप्त अकड़ो की व्याख्या कर परिणामो मे पाया कि, सामान्य व्यक्तियों कि अपेक्षा मद्यपान करने वाले व्यक्तियों का समायोजन सार्थक रूप से खराब पाया एवं उनमे आक्रामकता भी सार्थक रूप से अधिक देखी गई तथा दोनों समूहो के समायोजन एवं आक्रामकता पर उनके लिंग का कोई प्रभाव नही पाया।*

संकेत शब्द: *मद्यपान, समायोजन, आक्रामकता, तुलनात्मक अध्ययन, लिंग प्रभाव।*

1. प्रस्तावना :

वर्तमान समय में मद्यपान के घटनाक्रम में तेजी से वृद्धि हो रही है और विशेष रूप से युवा पीढ़ी इससे बुरी तरह प्रभावित हो रही है मद्यपान एक ऐसी विकृति है जो सिर्फ पीने वाले व्यक्ति को ही प्रभावित नहीं करता बल्कि हत्या, बलात्कार, आत्महत्या एवं दुर्घटना के एक मुख्य कारणों के रूप में स्वीकार किया गया है। मद्यपानता में व्यक्ति अधिक मात्रा में अल्कोहल का सेवन करता है। मद्यपानता के नैतिक स्वरूप की व्याख्या उससे पड़ने वाले बुरे परिणामों के रूप में की गई है। इस संबंध में जापान की यह एक प्रसिद्ध लोकप्रथा है पहले व्यक्ति शराब को पीता है फिर शराबी शराब को पीता है और अंत में शराब व्यक्ति को ही पी जाती है।

1.1 मद्यपानता

मद्यपानता एक ऐसी अवस्था है जिसमें अल्कोहल पर इतनी अधिक निर्भरता बढ़ जाती है कि इससे जीवन के समायोजन में बाधा पहुंचती है। मद्यपानता के कुछ ऐसे विशेष लक्षण देखने को मिले हैं जिससे इनकी पहचान आसान हो जाती है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ है की मद्यपान व्यसन से उच्च मस्तिष्कीय केंद्र अल्कोहल से इतना अधिक प्रभावित हो जाता है कि इनका चिंतन व सही निर्णय लेने की क्षमता लगभग समाप्त हो जाती है, इनका आत्म नियंत्रण समाप्त हो जाता है तथा ऐसे लोगों में क्रियात्मक समन्वय ढीला पड़ जाता है और उनमें दर्द, सर्द और अन्य तरह की अनुभूतियों के प्रत्यक्षण में विभेदन करने की क्षमता कम हो जाती है।

चैपलिन (1975) के अनुसार *"मद्यपान का अर्थ है व्यक्ति की वह अवस्था या स्थिति है जिससे वह अतिशय या अभ्यस्त पियक्कड़ बन जाता है।"*

1.2 समायोजन

समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवृत्य है क्योंकि प्रत्येक जीवित प्राणी के सामने कुछ ना कुछ परेशानियां और समस्याएं होती हैं। एक व्यक्ति कितना प्रभावशील है यह उसकी समस्याओं की संख्या से ज्ञात नहीं होता बल्कि उसकी प्रभावशीलता इस बात से स्पष्ट होती है कि वह अपनी समस्याओं तथा परिस्थितियों से किस प्रकार तालमेल बैठता है। व्यक्ति द्वारा अपनी परिस्थितियों तथा समस्याओं में तालमेल बैठाने की प्रक्रिया समायोजन कहलाती है।

गेट्स (1965) के अनुसार, *"समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है।"*

समायोजन की विशेषताएं

1. परिस्थिति का ज्ञान तथा अनुकूल आचरण।
2. संतुलन।
3. पर्यावरण तथा परिस्थिति से लाभ उठाना।
4. संतुष्ट एवं सुखी।
5. सामाजिक आदर्श चरित्र, संतुलित तथा दायित्व पूर्ण।
6. साहसी एवं समस्या समाधान।

1.3 आक्रामकता

समस्त जीवित प्राणियों में पाया जाने वाला एक व्यवहार आक्रामक व्यवहार है। आधुनिक जीवन में अलगाव, आक्रोश, हिंसा, आतंकवाद संबंधी व्यवहार के प्रदर्शन में आक्रामकता कुछ अधिक ही बढ़ी हुई दिखाई देती है। यहां जितने भी प्रकार के उपरोक्त व्यवहार हैं इन सभी में एक सामान्य प्रवृत्ति, आक्रामक व्यवहार दृष्टिगोचर होती है। आक्रामक व्यवहार वह व्यवहार है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को चोट, पीड़ा या दंड पहुंचाना चाहता है।

मिंलर एवं अन्य (1939) के अनुसार, *"आक्रामकता वह प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति का लक्ष्य दूसरे व्यक्ति को चोट पहुंचाना है।"*

2. संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण :

लाब्री एवं अन्य (2012) ने मद्यपान एवं कुसमायोजन के संबंधो का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए 253 के कॉलेज विद्यार्थियों के समूह को लिया गया। विद्यार्थियों पर ऑनलाइन सर्वे किया गया। सर्वे मे प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण कर परिणामों में पाया की विद्यार्थियों का खराब कॉलेज समायोजन, साप्ताहिक मद्यपान सेवन का परिणाम है।

व्हाइट एवं अन्य (2013) नें किशोरों में मद्यपान एवं आक्रामक व्यवहार का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए प्रति वर्ष 971 किशोर पुरुषों का विश्लेषण किया जिनकी आयु 13 से 18 वर्ष के बीच थी। विश्लेषण करने के पश्चात परिणामों में पाया की मदिरा के भीतर एल्कोहल की मात्रा में वृद्धि होने पर आक्रामक व्यवहार में भी वृद्धि होती है।

एफ्रॉन एवं एफ्रॉन (2016) ने आक्रामकता, पारिवारिक हिंसा एवं मद्यपान निर्भरता के अध्ययन में 832 श्रमिकों पर अध्ययन किया। अध्ययन मे आक्रामकता मापनी एवं सामाजिक समायोजन मापनी का प्रशासन किया। प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण कर परिणामो मे पाया की मद्यपान निर्भरता, पारिवारिक हिंसा, बाल दुराचार, वैवाहिक बलात्कार, कौटुंभिकचर तथा आक्रामकता को बढ़ावा देता है। तथा आक्रामकता, पारिवारिक हिंसा और मद्यपान निर्भरता में आक्रामकता और शराब के उपयोग के साथ सहसंबंध पाया।

मात्सजका एवं अन्य (2017) ने शारीरिक आक्रामकता और मद्यपान सेवन का अध्ययन किया। अध्ययन में 14 से 16 साल के 144 किशोरों पर प्राथमिक विश्लेषण किया और विश्लेषण में मद्यपान सेवन के उपरांत शारीरिक आक्रामकता की उत्पत्ति पाई एवं परिणामो मे पाया की मद्यपान और शारीरिक आक्रामकता बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

कारबोनू एवं अन्य (2018) ने समायोजन एवं औषध उपयोग के संबंध में पिता की औषध निर्भरता का अध्ययन किया। अध्ययन मे कनाडा के 653 शहरी निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के किशोरों पर स्कूल समायोजन एवं औषध उपयोग के संबंध मे पिता की औषध एवं मद्यपान निर्भरता का विश्लेषण किया और परिणामो मे पाया की जिन किशोरों के पिता शराब का सेवन करते थे उनके बालको मे भी मद्यपान निर्भरता देखी गई एवं उनका समायोजन एवं शैक्षिक प्रदर्शन पिछड़ा पाया तथा तंबाकू, मैरिजुआना और औषध व्यसन की उच्च आवृत्ति पायी गई।

किरवान एवं अन्य (2019) ने मद्यपान सेवन एवं यौन आक्रामकता का अध्ययन 101 स्नातक छात्रों पर किया जिसमे मद्यपान करने के बाद आक्रामकता और यौन आक्रामकता का विश्लेषण किया जिसके लिए आक्रामकता मापनी का उपयोग किया और परिणाम मे पाया कि मद्यपान सेवन एवं आक्रामकता के बीच धनात्मक सह-संबंध होता है।

सिंह (2020) ने मद्यपान करने वाले व्यक्तियों के आत्म सम्मान एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन के लिए 80 व्यक्तियों के दो समूहों को प्रतिदर्श के रूप में चुना। जिसमे प्रथम समूह में 40 मद्यपान करने वाले तथा द्वितीय समूह में 40 सामान्य व्यक्तियों को रखा गया। दोनों समूहो पर गंभीर मद्यपान निर्भरता प्रश्नावली, रोजवर्ग आत्मसम्मान मापनी तथा बेल समायोजन मापनी का प्रशासन कर परिणाम स्वरूप मद्यपान करने वाले व्यक्तियों में सामान्य व्यक्तियों की तुलना में निम्न आत्म सम्मान तथा खराब समायोजन पाया।

3 अनुसंधान अभिकल्प :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुप्रस्थ काट अनुसंधान अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

3.1 शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र मे सर्वेक्षण अनुसंधान विधि को उपयोग मे लिया गया है। एक ऐसा अनुसंधान जिसमें सर्वेक्षण तकनीक का उपयोग कर पहले यह पता लगाया जाता है कि किसी विशेष स्थिति में आजकल सामान्य रूप से क्या घटित हो रहा है और फिर इन खोजी गई बातों का अनुसंधान प्रतिवेदन के माध्यम से उचित रूप में वर्णन किया जाता है।

3.2 समस्या का कथन

"मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के समायोजन एवं आक्रामकता का अध्ययन।"

3.3 पदों की परिभाषा

प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित प्रमुख पदों की परिभाषाएं निम्नलिखित हैं।

1. **मद्यपान चैपलिन -(1975)** के अनुसार, *"मद्यपान का अर्थ व्यक्ति की व्यवस्था या परिस्थिति है जिसमें व्यक्ति अतिशय तथा अभ्यस्त पियक्कड़ बन जाता है।"*
2. **समायोजन बोरिंग -(1962**) के अनुसार, *"समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।"*
3. **आक्रामकता - मायर्स (1989)** के अनुसार, *"आक्रामकता एक ऐसा शारीरिक या शाब्दिक व्यवहार होता है जिसका उद्देश्य दूसरे को चोट पहुंचाना होता है।"*

3.4 अध्ययन की आवश्यकता एवं सार्थकता

आज के बदलते परिवेश तथा आधुनिकता के युग में मानव जीवन इतना कपटमय और व्यस्त हो गया है की उनके जीवनकाल में कब किस पहलू का प्रभाव पड़ा है यह कहना अत्यंत मुश्किल है। पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं से छुटकारा प्राप्त करने के लिए अमूमन लोग नशे का सहारा लेने लगे हैं। जिससे व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक, सामाजिक एवं आर्थिक हानि होती है, और व्यक्ति का समायोजन प्रभावित होता है एवं मद्यपान करने वाले व्यक्ति मे आक्रामक व्यवहार भी देखा जाता है। कई बार मद्यपान का शिकार बन कर व्यक्ति हत्या, बलात्कार, हिंसा जैसे अपराध भी कर जाता है। अतः यह जानना अत्यंत आवश्यक होगा की नवीन पीढ़ी पर इसका कितना प्रभाव पढ़ रहा है और इसे कैसे रोका जा सकता है। इस अध्ययन से यह पता करने का प्रयास किया गया है कि मद्यपान करने वाले व्यक्तियों के समायोजन और आक्रामकता पर क्या प्रभाव पड़ता है।

3.5 शोध प्रश्न

1. मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के समायोजन एवं आक्रामकता मे क्या अंतर है?
2. मद्यपान करने वाले व्यक्तियों के समायोजन एवं आक्रामकता पर उनके लिंग का क्या प्रभाव पड़ता है?

3.6 उद्देश्य

1. मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के समायोजन की तुलना करना।
2. मद्यपान करने वाले व्यक्तियों के समायोजन की लिंग के आधार पर तुलना करना।
3. मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के आक्रामकता की तुलना करना।
4. मद्यपान करने वाले व्यक्तियों के आक्रामकता की लिंग के आधार पर तुलना करना।

3.7 परिकल्पनाएं

1. मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।
2. मद्यपान करने वाले पुरुषों एवं महिलाओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।
3. मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के आक्रामकता में सार्थक अंतर नहीं है।
4. मद्यपान करने वाले पुरुषों एवं महिलाओं के आक्रामकता में सार्थक अंतर नहीं है।

3.8 चर

स्वतंत्र चर - मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्ति।
आश्रित चर - समायोजन एवं आक्रामकता।

3.9 प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श का आकार 100 रखा गया है, जिसमे बरेली जिले के 15 से 25 वर्ष के मद्यपान सेवन करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों को लिया गया है। जिनमे 50 महिलाएं और 50 पुरुषों को सम्मिलित किया गया है। प्रतिदर्श के चयन मे यादृच्छिक प्रतिचयन विधि को उपयोग मे लाया गया है। प्रतिदर्श समूहो के वितरण को तालिका–1 में दर्शाया गया है।

तालिका – 3.9.1 प्रतिदर्श समूहों का वितरण।

समूह	मद्यपान करने वाले व्यक्ति	सामान्य व्यक्ति	योग
पुरुष	25	25	50
महिलाएं	25	25	50
योग	50	50	**100**

3.10 अध्ययन के उपकरण

1. **समायोजन मापनी** – समायोजन के मापन के लिए कुमार की संशोधित समायोजन मापनी (1999) के हिन्दी संस्कारण को उपयोग में लिया गया है। इस मापनी में 40 पद रखे गए हैं जो संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन से संबंधित है। यह मापनी किसी भी आयु वर्ग पर प्रशासित की जा सकती है। मापनी के सभी प्रश्नों का उत्तर 'हां' एवं 'नहीं' में देना है। मापनी की विश्वसनीयता की जांच दो अलग अलग विधियों द्वारा की गयी। अर्द्ध विच्छेद विधि द्वारा 108 पुरुष प्रतिदर्श पर स्पेयरमैन ब्राउन सूत्र के प्रयोग से परीक्षण की विश्वसनीयता .83 पायी गयी तथा परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा 63 पुरुषों पर एक सप्ताह के अंतराल पर .81 तथा 51 महिलाओं पर दो सप्ताह के अंतराल पर .74 पाई गयी। वैधता के लिए प्रस्तुत मापनी के साथ अस्थाना की 'हिंदुस्तानी समायोजन मापनी' का सह सम्बंध गुणांक .71 पाया गया।
2. **आक्रामकता मापनी** – आक्रामकता मापनी माथुर और भटनागर (2004) द्वारा प्रतिपादित है। आक्रामकता मापनी व्यक्ति के विभिन्न परिस्थितियों में किए जाने वाले व्यवहार से संबंधित है। इस मापनी में 55 कथन हैं प्रत्येक कथन पांच विकल्पों (पूर्णता सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णता असहमत) के साथ है। मापनी में 30 कथन सकारात्मक एवं 25 नकारात्मक कथन है। इस मापनी का प्रशासन 14 वर्ष से अधिक के सभी व्यक्तियों पर किया जा सकता है। मापनी की विश्वसनीयता परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा 300 शहरी पुरुषों एवं महिलाओं पर विश्वसनीयता गुणांक .88 एवं .81 पाया गया। मापनी की समवर्ती वैधता की जांच के लिए मर्रे की 'आक्रामकता प्रश्नावली' के पदों से तुलना करने पर वैधता गुणांक पुरुषों पर .80 तथा महिलाओं पर .78 पाया गया।

3.11 अनुसंधान प्रक्रिया

मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के समायोजन एवं आक्रामकता का अध्ययन करने के लिए संबन्धित विषय पर पूर्व मे हुए अध्ययनो का सर्वेक्षण करके अध्ययन की समस्या को परिभाषित किया गया। अध्ययन के लिए सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का उपयोग करते हुए बरेली जिले के 50 मद्यपान करने वाले तथा 50 सामान्य व्यकियों (जिनमे 50 पुरुषों एवं 50 महिलाओं) को यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चुनकर उपर्युक्त निर्देश देते हुए संशोधित समायोजन मापनी एवं आक्रामकता मापनी का प्रशासन किया गया। प्राप्त अनुक्रियाओं का फलांकन करने के पश्चात प्राप्त आंकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या कर परिणामो को प्राप्त किया गया।

4. आंकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या :

फलांकन के पश्चात आंकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिसके लिए मध्यमान, मनक विचलन एवं टी-मान की गणना की गयी गणना मे प्राप्त आंकड़ो को तालिका – 2 मे दर्शाया गया है।

तालिका – 4.1 चरों से संबन्धित समूहो के मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-मान।

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान
समायोजन	मद्यपान करने वाले व्यक्ति	50	22.72	3.78	**5.33***
	सामान्य व्यक्ति	50	26.96	4.16	
	मद्यपान करने वाले पुरुष	25	23.04	3.67	**0.59**
	मद्यपान करने वाली महिलाएं	25	22.40	3.95	
आक्रामकता	मद्यपान करने वाले व्यक्ति	50	207.22	6.31	**9.64***
	सामान्य व्यक्ति	50	195.38	5.96	
	मद्यपान करने वाले पुरुष	25	207.48	6.34	**0.29**
	मद्यपान करने वाली महिलाएं	25	206.96	6.41	

*0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक।

मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के समायोजन से संबन्धित अकड़ो का विश्लेषण करने पर टी-मान 5.33 प्राप्त हुआ जो 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना "मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है। दोनों समूहों के समायोजन मे सार्थक अंतर पाया गया। सामान्य व्यक्तियों का समायोजन

मद्यपान करने वाले व्यक्तियों की तुलना मे उत्तम पाया गया। जैसा कि सिंह (2020) ने अपने अध्ययन में मद्यपान करने वाले व्यक्तियों का समायोजन सामान्य व्यक्तियों की तुलना मे खराब पाया। कारबोनू एवं अन्य (2018) ने मद्यपान निर्भरता वाले छात्रों में समायोजन पिछड़ा पाया। तथा लाब्री एवं अन्य (2012) के अध्ययन मे भी पाया गया कि कालेज मे खराब समायोजन साप्ताहिक मद्यपान व्यसन का परिणाम है।

मद्यपान करने वाले पुरुषों एवं महिलाओं के समायोजन से संबन्धित अकड़ो का विश्लेषण करने पर टी-मान 0.59 प्राप्त हुआ जो किसी भी विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना "मद्यपान करने वाले पुरुषों एवं महिलाओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।" स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के समायोजन मे कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः मद्यपान करने वाले पुरुषों एवं मद्यपान करने वाली महिलाओं का समायोजन समान पाया गया।

मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के आक्रामकता से संबन्धित अकड़ो का विश्लेषण करने पर टी-मान 9.64 प्राप्त हुआ जो 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना "मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के आक्रामकता में सार्थक अंतर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है। दोनों समूहों के आक्रामकता के स्तर मे सार्थक अंतर पाया गया। इस प्रकार मद्यपान करने वाले व्यक्तियों की तुलना मे आक्रामकता सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी। जैसा किरवान एवं अन्य (2019) ने अपने अध्ययन में आक्रामकता एवं मद्यपान व्यसन के बीच धनात्मक सहसंबंध पाया। मात्सजका एवं अन्य (2017) ने भी मद्यपान और शारीरिक आक्रामकता में सकारात्मक सहसंबंध पाया। एफ्रॉन एवं एफ्रॉन (2016) ने पाया की मद्यपान निर्भरता, पारिवारिक हिंसा, बाल दुराचार, वैवाहिक बलात्कार तथा आक्रामकता को बढ़ावा देता है। तथा व्हाइट एवं अन्य (2013) का अध्ययन भी अल्कोहल की मात्रा मे बृद्धि करने पर आक्रामक व्यवहार मे बृद्धि की पुष्टि करता है।

मद्यपान करने वाले पुरुषों एवं महिलाओं के आक्रामकता से संबन्धित अकडों का विश्लेषण करने पर टी-मान 0.29 प्राप्त हुआ। जो किसी भी विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना "मद्यपान करने वाले पुरुषों एवं महिलाओं के आक्रामकता में सार्थक अंतर नहीं है।" स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के आक्रामकता मे कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः मद्यपान करने वाले पुरुषों एवं मद्यपान करने वाली महिलाओं में आक्रामकता समान पायी गयी।

5. परिणाम :

सामान्य एवं मद्यपान करने वाले व्यक्तियों के समायोजन की तुलना करने पर दोनों समूह के समायोजन में सार्थक अंतर पाया। सामान्य व्यक्तियों में समायोजन मद्यपान करने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक पाया तथा सामान्य व्यक्ति अपनी समस्याओं में सामंजस्य, आवश्यकताओं की संतुष्टि तथा वातावरण के साथ समायोजन करने में अधिक सक्षम पाए। दोनों समूहों की लिंग के आधार पर तुलना करने पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः यह कह सकते हैं की मद्यपान करने वाले पुरुषों एवं मद्यपान करने वाली महिलाओं का समायोजन समान पाया। इस प्रकार व्यक्तियों के समायोजन पर उनके लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नही देखा गया।

आक्रामकता की तुलना करने पर दोनों समूहों के आक्रामकता के स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। मद्यपान करने वाले व्यक्तियों में सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक आक्रामकता पायी गयी। मद्यपान करने वाले व्यक्तियों में आक्रामकता से संबंधित लक्षण जैसे चिड़चिड़ापन, बेचैनी, कुंठा, स्वयं व दूसरों को चोट पहुंचाने की प्रवृत्ति, जिद्दी स्वभाव, क्रोध एवं स्वतंत्रता की कमी आदि की अधिकता पाई गयी। मद्यपान करने वाले पुरुषों एवं महिलाओं के आक्रामकता की तुलना करने पर दोनों समूहों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः हम कह सकते हैं कि दोनों समूहों में आक्रामकता समान देखी गई। इस प्रकार व्यक्तियों के आक्रामकता पर उनके लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नही देखा गया।

6. निष्कर्ष :

मद्यपान करने वाले एवं सामान्य व्यक्तियों के समायोजन एवं आक्रामकता के अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण एवं परिणामों से इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि मद्यपान करने वाले व्यक्तियों का समायोजन सामान्य व्यक्तियों से कम पाया। मद्यपान करने वाले व्यक्तियों का समायोजन निम्न होने के कारण उनको आवश्यकताओं की संतुष्टि, सामाजिक समायोजन, वातावरण के साथ समायोजन आदि में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। मद्यपान करने वाले व्यक्तियों में आक्रामकता सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक पाई गयी। अतः निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा मद्यपान करने वाले व्यक्तियों में कुंठा, चिड़चिड़ापन, बेचैनी, जिद्दी स्वभाव, क्रोध, स्वयं व दूसरों को चोट पहुंचाने की प्रवृत्ति, विरोधी प्रवृत्ति आदि व्यवहार अधिक पाया जाता है। अध्ययन में यह भी देखा गया है कि, मद्यपान करने वाले व्यक्तियों के समायोजन एवं आक्रामकता पर उनके लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

7. परिसीमाएं :

1. अध्ययन केवल 100 व्यक्तियों के प्रतिदर्श पर किया गया है जिनमें 50 मद्यपान करने वाले एवं 50 सामान्य व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया है।
2. समस्या के अध्ययन हेतु केवल बरेली जिले में रहने वाले सामान्य एवं मद्यपान करने वाले व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में चरों की माप हेतु संशोधित समायोजन मापनी एवं आक्रामकता मापनी का प्रयोग किया गया है।

8. सुझाव :

1. प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श का आकार N=100 लिया गया है। अध्ययन को विस्तृत आकार के प्रतिदर्श पर भी किया जा सकता है।
2. अध्ययन में केवल 16 से 25 वर्ष की आयु के प्रतिदर्श का चुनाव किया गया है। इसको विभिन्न आयु वर्ग पर भी संपादित किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में महिलाओं एवं पुरुषों को सम्मिलित किया गया है। भविष्य में होने वाले अध्ययनों में तृतीय लिंग को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
4. अध्ययन में प्रतिदर्श केवल बरेली जिले से ही लिया गया है। इस अध्ययन को क्षेत्रीय, राज्यीय, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी किया जा सकता है।

आभार :

लेखक उन सभी के प्रति आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने अध्ययन में भाग लिया और शोध प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने में आवश्यक सहायता प्रदान की।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. कुमार, प्रमोद. (1999). *संशोधित समायोजन मापनी,* प्रसाद साइको कॉरपोरेशन, दिल्ली।
2. माथुर, जी. पी., भटनागर, राज कुमारी. (2012). *आक्रामकता मापनी,* राखी प्रकाशन, आगरा।
3. श्रीवास्तव, डी. एन., मिश्रा, अल्का. (2015). *मापन और सांख्यिकी,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
4. श्रीवास्तव, रामजी. (2008). *आधुनिक अपसामान्य मनोविज्ञान,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
5. सिंह, अरुण कुमार. (2008). *व्यावहारिक मनोविज्ञान,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6. सिंह, राजेंद्र प्रसाद., उपाध्याय, जितेंद्र कुमार. (2011). *विकासात्मक मनोविज्ञान,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
7. सुलेमान, मोहम्मद., कुमार, दिनेश. (2017). *मनोरोग विज्ञान,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
8. Carbonneau, R., Vitaro, F., & Tremblay, R. E. (2018). School Adjustment and Substance Use in Early Adolescent Boys: Association With Paternal Alcoholism With and Without Dad in the Home. *The Journal of Early Adolescence*, 38(7), 1008–1035.
9. Kirwan, M., Lanni, D. J., Warnke, A., Pickett, S. M., & Parkhill, M. R. (2019). Emotion Regulation Moderates the Relationship Between Alcohol Consumption and the Perpetration of Sexual Aggression. *Violence against women*, 25(9), 1053–1073.
10. LaBrie, J. W., Ehret, P. J., Hummer, J. F., & Prenovost, K. (2012). Poor adjustment to college life mediates the relationship between drinking motives and alcohol consequences: a look at college adjustment, drinking motives, and drinking outcomes. *Addictive behaviors*, 37(4), 379–386.
11. Matuszka, B., Bácskai, E., Czobor, P., & Gerevich, J. (2015). Physical Aggression and Concurrent Alcohol and Tobacco Use Among Adolescents. *International Journal of Mental Health and Addiction,* 15, 90-99.
12. Singh, Dharmendra Kumar (2020). Self Esteem and Adjustment in Alcohol Individual, *Purkala with ISSN 0971-2143 Is an UGC Care Journal*, 31(8), 1328-1336.
13. Staff, J., Maggs, J. L., Cundiff, K., & Evans-Polce, R. J. (2016). Childhood cigarette and alcohol use: Negative links with adjustment. *Addictive behaviors*, 62, 122–128.
14. White, H. R., Fite, P., Pardini, D., Mun, E. Y., & Loeber, R. (2013). Moderators of the dynamic link between alcohol use and aggressive behavior among adolescent males. *Journal of abnormal child psychology*, 41(2), 211–222.